आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 19 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"आज अपने को विकर्माजीत बनाने का पुरुषार्थ करे, इसलिए ध्यान रखे कोई व्यर्थ न चले "*

हमारा जीवन बहुत बहुत **मूल्यवान** है। अपने जीवन को स्वयं **महत्व** दे। अपने अनमोल समय की कीमत को पहचाने। और जान ले कि हमारा एक एक **संकल्प** बहुत कीमती है, बहुत महान है। उसकी **एनर्जी** सारे संसार को पहुँचती है।

अगर हम व्यर्थ सोचते है तो वह निगेटिव एनर्जी भी वायुमंडल में फैल कर वातावरण को दूषित करती है। और इससे स्थापना के कार्य में **सूक्ष्म** रूप से वाॅधा पड़ती है।

इसलिए हमें ध्यान रखना है, इस समय हम सभी अपने विकर्म विनाश करने के लिए बाबा से योग लगाकर रहे है। जितना **पावरफूल योग** लगेगा, अर्थात

मन निरसंकल्प रहकर एक की **याद में मग्न** हो जायेंगे, उतना ही हमारे विकर्म विनाश होंगे।

और जितने जितने विकर्म विनाश होंगे हमारे संस्कार बदलते जायेंगे। हम बहुत **हल्के** होते जायेंगे। हमारी **खुशी** बढ़ती जायेगी। हमारे विघ्न समाप्त होते जायेंगे। हमारी टोटल स्थिति बृद्धि होगी।

तो हम ध्यान दे, हमारे **विकर्म विनाश** अवश्य करने है। क्योंकि अगर हम अपना विकर्म विनाश न किये तो उनका फल हमें भोगना पड़ेगा। और वह बहुत भयानक होगा।

क्योंकि विकर्म थोड़े नहीं, ढाई हजार साल में न जाने कितने विकर्म हम किये है। इसलिए अब बहुत अच्छी **तपस्या** करके स्वयं को **विकर्माजीत** बना देना है।

और जैसे जैसे हम विकर्मो से मुक्त होते जायेंगे एक **सूक्ष्म स्वरुप**, एक सूक्ष्म पहचान हम कर सकेंगे कि हम से अब और कोई विकर्म नहीं होगा।

न झूठ, न चोरी, न ठगी, विकारों का, न किसी को धोखा देने का, न क्रोध करने का। यह सब चीजें शान्त होती जायेगी। तो हम विकर्म विनाश कर रहे है। हमें यह ध्यान रखना है कि अब हमसे सूक्ष्म विकर्म न होते रहे।

तो आईये चेक करे ...

" हम किसी की खुशी तो नहीं छिनते? हम किसी की **स्थिति** को डिस्टर्ब तो नहीं करते? हमारे कारण कोई मनुष्य परेशान तो नहीं रहता है? हमारी **दृष्टि** देह पर तो सदा नहीं रहती है? देह का आकर्षण तो हमें नहीं है? या देहधारियों के बारें में बहुत सारे विकल्प हमारे मन में नहीं चलते है? "

क्योंकि यह सभी सूक्ष्म विकर्म है। और यदि यह बढ़ते रहे तो आत्मा बोझिल होती जायेगी। और बोझिल आत्मा, बोझिल मन कभी ऊपर नहीं उड़ सकेगी। हमारा योग भी कठिन, भारी होता जायेगा और हमारी खुशी भी बिल्कुल नष्ट होती जायेगी।

जिनको व्यर्थ बहुत चलते है, जिनके **योग** नहीं लगता, जो बहुत परेशान रहते है, समझ ले कोई न कोई सूक्ष्म विकर्म अवश्य हो रहे होंगे।

तो आईये, हम सभी विकर्मो से मुक्त होकर निर्विकारी बने, विकर्माजीत बने। ताकि हमारे द्वारा स्थापना के कार्य में सदा महान योगदान होता रहे।

केवल धन देना, तन देना, केवल यज्ञ सेवा करना ही पर्याप्त नहीं है। लेकिन हमें बहुत बहुत योगयुक्त रहकर विकर्माजीत बनकर इस स्थापना के कार्य को सम्पन्न करना है।

तो आज हम स्वमान में रहेंगे ....

" मैं राजऋषि हूँ .. बहुत रॉयल हूँ .. लाइट हाउस माइट हाउस फरिश्ता हूँ .. चलता फिरता फरिश्ता .. मुझसे चारों ओर निरंतर वायब्रेशन्स फैलते है .. मेरी लाइट के प्रभाव से संसार से अंधकार दूर होता है "

और थोड़ी देर के लिए चलेंगे ....

" परमधाम .. ज्ञान सूर्य की किरणें के नीचे "

बहुत सुन्दर अनुभूति होगी।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org